पाठ 9: यशपाल (लखनवी अंदाज़)

पाठ का सार (Summary):
यह कहानी एक व्यंग्य है जो पतनशील सामंती वर्ग (नवाबों) की बनावटी और दिखावटी जीवन-शैली पर चोट करती है। लेखक ट्रेन के सेकंड क्लास डिब्बे में सफर कर रहा था। डिब्बे में पहले से ही लखनऊ के एक नवाब साहब बैठे थे। उनके सामने एक तौलिए पर दो ताज़े खीरे रखे थे। लेखक के आने से नवाब साहब को असुविधा महसूस हुई। नवाब साहब ने खीरे खाने की पूरी तैयारी की—उन्हें धोया, काटा, नमक और मिर्च बुरका (छिड़का)। फिर उन्होंने लेखक से खाने के लिए पूछा, लेकिन लेखक ने मना कर दिया। अपनी नवाबी शान और झूठा दिखावा बनाए रखने के लिए, नवाब साहब ने खीरे की एक-एक फाँक को मुँह तक उठाया, उसे सूँघा, और बिना खाए ही खिड़की से बाहर फेंक दिया। अंत में उन्होंने एक डकार ली, मानो खीरे की महक से ही उनका पेट भर गया हो।

प्रश्न-अभ्यास (NCERT Solutions)

प्रश्न 1. लेखक को नवाब साहब के किन हाव-भावों से महसूस हुआ कि वे उनसे बातचीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं हैं?

> जब लेखक ट्रेन के सेकंड क्लास डिब्बे में अचानक चढ़ गया, तो वहाँ पहले से बैठे नवाब साहब की आँखों में एकांत चिंतन में खलल (बाधा) पड़ने का असंतोष दिखाई दिया। नवाब साहब ने लेखक के आने पर कोई उत्साह नहीं दिखाया। उन्होंने न तो लेखक की ओर देखा, न ही उनसे कोई बातचीत शुरू की, और न ही उनका अभिवादन किया। वे खिड़की के बाहर देखने का नाटक करने लगे और लेखक को पूरी तरह नज़रअंदाज़ कर दिया। इन सभी हाव-भावों से लेखक को महसूस हुआ कि नवाब साहब उनसे बातचीत करने के लिए बिल्कुल उत्सुक नहीं हैं।

प्रश्न 2. नवाब साहब ने बहुत ही यत्न से खीरा काटा, नमक-मिर्च बुरका, अंततः सूँघकर ही खिड़की से बाहर फेंक दिया। उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा? उनका ऐसा करना उनके कैसे स्वभाव को इंगित करता है?

नवाब साहब ने ऐसा अपनी 'नवाबी शान' और झूठा दिखावा बनाए रखने के लिए किया होगा। जब उन्होंने लेखक से खीरा खाने के लिए पूछा और लेखक ने इनकार कर दिया, तो नवाब साहब को लगा कि अगर वे लेखक के सामने खीरा (जिसे वे एक साधारण और तुच्छ पदार्थ मानते थे) खाएँगे, तो उनकी नवाबी शान में कमी आ जाएगी। इसलिए अपनी रईसी (अमीरी) दिखाने के लिए उन्होंने खीरे को केवल सूँघा और बाहर फेंक दिया।

उनका ऐसा करना उनके दिखावटी (artificial), बनावटी, और पतनशील सामंती स्वभाव (feudal mentality) को इंगित करता है, जहाँ वास्तविकता से दूर रहकर झूठी शान बघारने को महत्त्व दिया जाता है।

प्रश्न 3. बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है? यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?

लेखक यशपाल ने यह विचार नवाब साहब की उस घटना के बाद व्यंग्य रूप में कहा था जब नवाब साहब बिना खीरा खाए (केवल सूँघकर) पेट भरने की डकार लेते हैं। लेखक सोचता है कि यदि बिना खाए डकार आ सकती है, तो क्या बिना विचार, घटना और पात्रों के कहानी भी लिखी जा सकती है?

हम इस विचार से पूरी तरह असहमत हैं। जिस प्रकार बिना खाए पेट नहीं भर सकता, ठीक उसी प्रकार बिना किसी विचार (Theme), घटना (Plot), और पात्रों (Characters) के कोई कहानी नहीं रची जा सकती। कहानी के निर्माण के लिए ये तीनों तत्त्व अत्यंत आवश्यक हैं।

प्रश्न 4. आप इस निबंध को और क्या नाम देना चाहेंगे?

इस निबंध (कहानी) के लिए कुछ अन्य उपयुक्त नाम निम्नलिखित हो सकते हैं:

1. 'नवाबी दिखावा'
2. 'झूठी शान'
3. 'खीरे की नवाबी दावत'
4. 'पतनशील सामंतवाद'